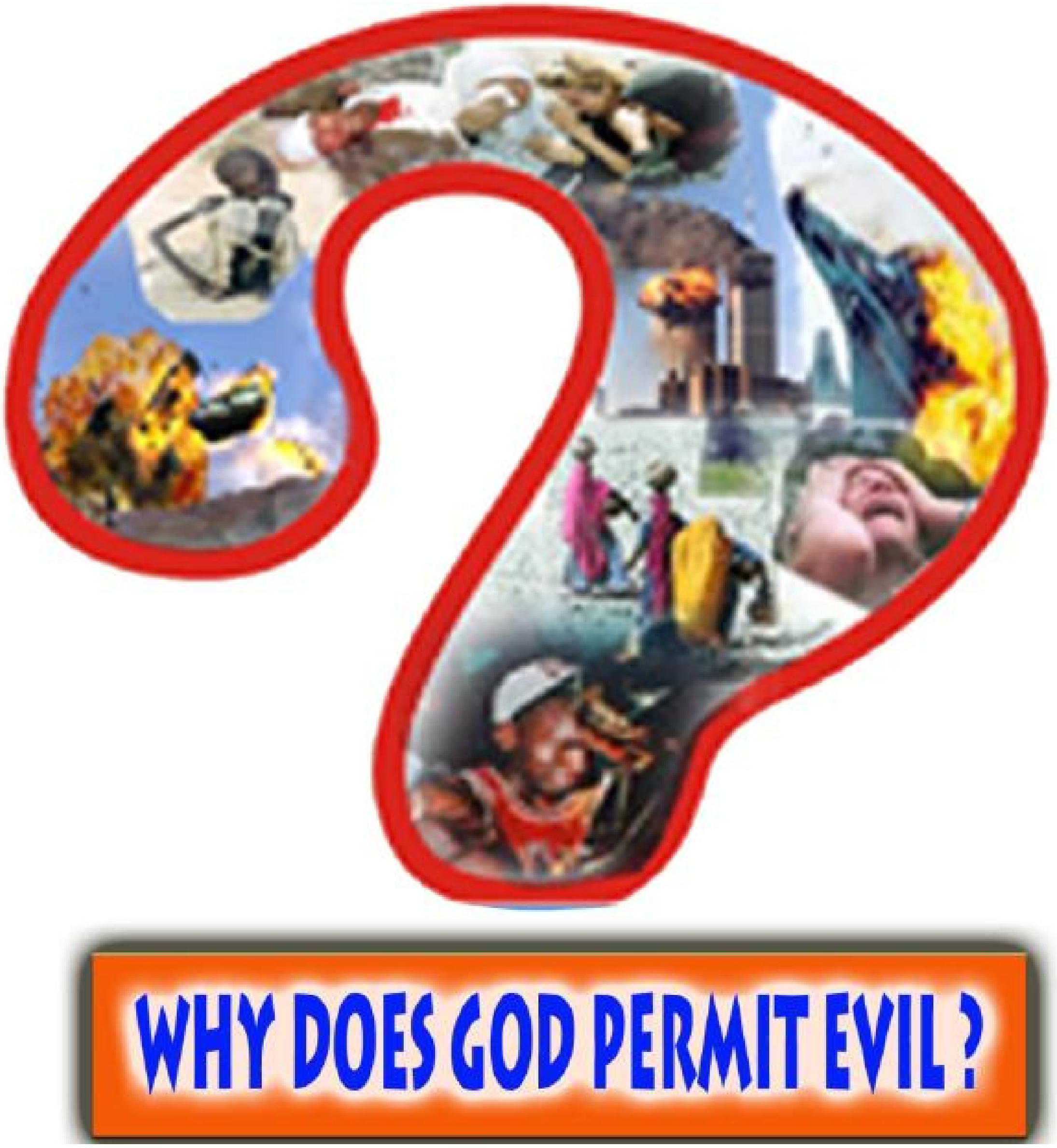


**तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है**

**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

**कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।**

**ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।**

आज हम एक ऐसे सवाल का अध्ययन करेंगे जो लगभग लोगों के **ह्रदय** और **मन** में जाग उठता है!

किसी को केवल प्रतिदिन अपना अख़बार खोलना या टीवी चालू करना पड़ेगा और वह हमारी दुनिया के **भयानक और दयनीय अवस्था को देख पाएंगे**!

☞ हम कहीं यह पढ़ते हैं की कोई **नया शादीशुदा जोड़ा** अपने हनीमून से ख़ुशी ख़ुशी लौटते हुए अचानक अपने वापसी के रास्ते में एक भयानक आमने--सामने की टक्कर में मर जाते हैं जबकि उनकी अपनी कोई गलती नहीं थी!!

**सबके दिल में जाग उठने वाला सवाल यह है कि … क्यों?**

☞ इसके बाद हम देखते हैं की **मासूम बच्चे** जन्म के कुछ ही दिन या महीनों में भोजन या दवा के अभाव के कारण मर जाते हैं ⇨ क्यों?

**कोई ये आश्चर्य करेगा कि वे सब पैदा ही क्यों हुए!**

☞ फिर हम देखते हैं कि सैकड़ों और हजारों निर्दोष लोग एड्स, सार्स, चेचक, कैंसर आदि जैसी **घातक बीमारियों और महामारी** से मर रहे हैं ⇨ क्यों?

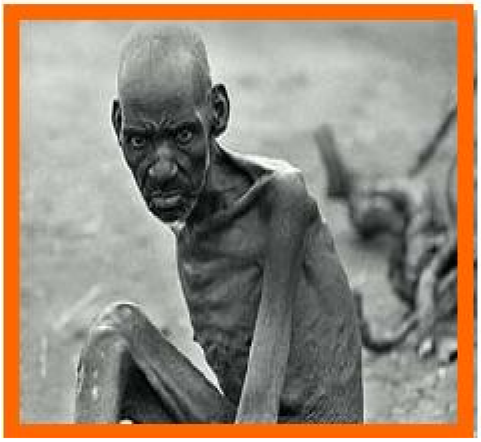

☞ फिर हम देखते हैं कि **युद्ध और क्रांतियों** में हर साल इतने सारे गरीब निर्दोष लोगों का जीवन नष्ट होता जाता है ⇨ क्यों?



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

☞ और जो ये **<u>बुराइयाँ</u>** करते हैं उनको कुछ नहीं होता! ⇨ क्यों?
और ऐसा लगता है कि वे बिना सजा के बच जाते हैं!

☞ फिर हम हत्या, क्रूरता, अकाल और बलात्कार होते हुए देखते हैं जिसमें अपराधियों (अन्यायी) का कोई न्याय नहीं किया जाता ⇨ क्यों?

☞ और अगर यह सब काफी नहीं था तो बाढ़, आग, चक्रवात, भूकंप, बवण्डर आदि **<u>प्राकृतिक आपदाएं</u>** हैं ... जो हजारों लोगों को बहुत कष्ट और दुख पहुंचाती हैं और कोई भी इन प्राकृतिक आपदाओं के रोष को नियंत्रित करने में सक्षम नहीं हैं ⇨ क्यों?


**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

☞ और उसके बाद फिर हम देखते हैं कि हर साल हजारों **<u>अपंग</u>** हो जाते हैं और हाथ, पैर, आंख और रीढ़ की हड्डी को खो देते हैं, और ऐसी विकलांग परिस्थितियों में बाकी के जीवन को बिताने के लिए मजबूर हो जाते हैं ⇨ क्यों?

**ओह! विलाप कितने सारे दिलों में है! इस सबका उत्तर क्या है?**

☞ **क्या परमेश्वर को परवाह नहीं?**

☞ **क्या वे इन सब क्लेशों को होने से रोक नहीं सकते?**

☞ **वे क्यों कुछ नहीं करते?**

ये लाखों लोगों के दिलों में उठने वाले अत्यन्त महत्वपूर्ण सवाल हैं।



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

☞ वास्तव में कई अच्छे लोग इन सवालों के संतोषजनक **जवाब** और **स्पष्टीकरण** न मिलने के कारण इस निष्कर्ष पर पहुँच गए हैं कि **परमेश्वर नहीं है** और वे इसका कारण यह देते हैं कि यदि परमेश्वर होते -

**- तो क्या वे इन सभी परिस्थितियों को बदलने के लिए कुछ नहीं करते?**

☞ क्या उन्हें इन सारे कष्ट, दुःख और दर्द को देखकर **दया** नहीं आती?

☞ **फिर, इसका उत्तर क्या है?**

यह सिर्फ आज का सवाल **नहीं** है बल्कि यह मनुष्य के पूरे इतिहास तक पहुँचता है!!
- यहाँ तक कि परमेश्वर के **पवित्र लोग** और **भविष्यद्वक्ताओं** ने इन जवाबों को ढूंढ़ा है-

आइये हम इस विषय पर **बुद्धिमान शिक्षक राजा सुलैमान** की बातों को सुनें -

सभोपदेशक (Ecclesiastes) 8:16, 17 "जब मैंने बुद्धि प्राप्त करने और सब काम देखने के लिये जो पृथ्वी पर किए जाते हैं अपना मन लगाया... तब मैंने परमेश्वर का सारा काम देखा जो सूर्य के नीचे किया जाता है, उसकी थाह मनुष्य नहीं पा सकता..."

☞ देखा आपने? सबसे बुद्धिमान व्यक्ति भी इसी निष्कर्ष पर आया!

और **धैर्यवान अय्यूब** ने कहा -

अय्यूब (Job) 10:3 "क्या तुझे अन्धेर करना, और दुष्टों की युक्ति को सफल करके अपने हाथों के बनाए हुए को निकम्मा जानना भला लगता है?"

☞ जी हाँ! फिर यही वो बात है जिसे होठों के द्वारा व्यक्त किया जाता है और लाखों लोगों के दिलों में अव्यक्त है!

और **भविष्यद्वक्ता हबक्कूक** ने कहा -

हबक्कूक (Habakkuk) 1:2 "हे यहोवा मैं कब तक तेरी दोहाई देता रहूंगा, और तू न सुनेगा? मैं कब तक तेरे सम्मुख "उपद्रव", "उपद्रव" चिल्लाता रहूंगा? क्या तू उद्धार नहीं करेगा?"

☞ अहा! फिर से, लाखों दिलों की पुकार!

इसके बाद हम भजन संहिता लिखने वाले **दाऊद** की बातों को सुनते हैं -

भजन संहिता (Psalms) 44:23 “हे प्रभु, जाग! तू क्यों सोता है? उठ! हम को सदा के लिये त्याग न दे!”

यहाँ राजा दाऊद परमेश्वर पर सोते रहने का दोष लगाते हैं जबकि उन्होंने खुद दूसरे भजन संहिता में लिखा है कि **परमेश्वर कभी नहीं सोते** - **भजन संहिता 121:3**

जी हाँ! वे ढूंढ़े पर उत्तर न पा सके!

.... वे हैरान थे!!

वे ज्यादा हैरान इस कारण से थे क्योंकि उन्होंने वचनों में पढ़ा है कि परमेश्वर **न्यायी** हैं और **भले** हैं और **पवित्र** हैं और सब प्रकार की बुराई से घृणा करते हैं -

भजन संहिता (Psalms) 5:4, 5 “क्योंकि तू ऐसा ईश्वर नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न हो; बुराई तेरे साथ नहीं रह सकती। घमंडी तेरे सम्मुख खड़े होने न पांएगे; तुझे सब अनर्थकारियों से घृणा है।”

... इसके अलावा वे पढ़े की परमेश्वर **पूरे सामर्थ्यवान** हैं और

**सर्वशक्तिमान** हैं और ऐसा कुछ भी **नहीं** जो उनकी इच्छा का विरोध कर सके - इस प्रकार से हम फिर पढ़ते हैं -

यशायाह (Isaiah) 14:27 “क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है और कौन उसका टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोक सकता है?”

**तो फिर एक न्यायी, प्यारे और सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने इस संसार पर इतनी बुराई की अनुमति क्यों दी?**

**इसका उत्तर अवश्य होना चाहिए!**

पर जैसा हमने देखा, परमेश्वर के पवित्र लोग और **भविष्यद्वक्ता** इसका उत्तर नहीं पा सके!

क्या आपको लगता है कि **इसका उत्तर हम आज पा सकेंगे?**

**इसका उत्तर किसके पास है?**


**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

खुद परमेश्वर ही के पास है! उनके अपने शब्दों में देखते और सुनते हैं -

यिर्मयाह (Jeremiah) 33:3 “मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी-बड़ी और कठिन बातें बताऊंगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता।”

जरा कल्पना करें! महान परमेश्वर और ब्रहमाण्ड के सृष्टिकर्ता स्वयं ही उनसे सवाल पूछने का **न्योता** दे रहे हैं! क्या इस बात पर विश्वास करना मुश्किल है?

इसी के बारे में आइये हम फिर से पढ़ते हैं -

यशायाह (Isaiah) 1:18 “यहोवा कहता है, आओ, हम आपस में वादविवाद करें...।”

देखा! परमेश्वर **स्वयं ही सवाल पूछने का न्योता दे रहे हैं!**

**पर यह कितने दुःख की बात है कि बहुत कम लोग उनसे कभी पूछते हैं!**

वास्तव में परमेश्वर के पुत्र - हमारे प्रभु यीशु ने इस बात की पुष्टि की और इसे दोहराया, जब उन्होंने मत्ती 7:7 वचन को कहा -

मत्ती (Matthew) 7:7 “मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।”

जी हाँ! यीशु **माँगने, ढूँढ़ने और खटखटाने** का न्योता देते हैं!

और 8 वें वचन के वादे पर **ध्यान** दें -

मत्ती (Matthew) 7:8 “क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।”

जी हाँ! इस वचन में कहा गया है कि - **"जो कोई"!**

**यह परमेश्वर से मिला एक महान और अदभुत वादा है!**

**तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है**

पर बहुत कम लोग हैं जिन्होंने यीशु के इन वचनों का मतलब सचमुच में समझा है!
वे सोचते हैं कि ये **"माँगना"** और **"ढूँढ़ना"** सांसारिक वस्तुओं के लिए है!

- नौकरी, घर, गाड़ी, उधार, दुल्हन, दूल्हे आदि।

**लेकिन यीशु के कहने का मतलब यह तो नहीं था?**

यीशु ने हमारी प्रत्येक आवश्यकता के बारे में क्या सिखाया है?
उनकी दर्ज किये गए बातों को हम मत्ती 6:8 वचन में पढ़ते हैं -

मत्ती (Matthew) 6:8 “इसलिए तुम उनके समान न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है कि तुम्हारी क्या क्या आव्यशक्ताएँ है।”

जी हाँ! परमेश्वर, हमारे पिता हमारी भोजन, वस्त्र, आश्रय आदि सांसारिक आवश्यकताओं को जानते हैं।
यदि सांसारिक माता-पिता अपने बच्चों की हर जरूरत को उनके **पूछे बिना ही जानते** हैं और इन जरूरतों को पूरा करने की योजना बनाते हैं और पूरी करते हैं - तो परमेश्वर, हमारे पिता कितना ज्यादा ऐसा करेंगे!
यह **वादा** सांसारिक आवश्यकताओं से **सम्बंधित है ही नहीं!**

**यह आत्मिक आशीषों और ज्ञान और समझ के लिए एक आत्मिक वादा है।**

इससे पहले कि हम उत्तर के लिए परमेश्वर के पास जाएँ, हमें ये याद रखना चाहिए कि हम आज इस **सवाल का जवाब पाने** की आशा इसलिए नहीं करते क्योंकि हम **बहुत बुद्धिमान** हैं बल्कि सिर्फ इसलिए करते है क्योंकि हम **अंत** के समय में जी रहे हैं!
इसलिए यदि हम परमेश्वर के पास इस सवाल के साथ जायेंगे तो वे हमें इसके उत्तर से प्रकाशित करेंगे -

**तो परमेश्वर कैसे बात करते और उत्तर देते हैं?**

परमेश्वर हमसे उनके वचनों के द्वारा बात करते हैं और इसीलिए हम यशायाह 34:16 में पढ़ते हैं कि -

यशायाह (Isaiah) 34:16 "यहोवा की (पुस्तक) से (ढूंढ़कर) पढ़ो: इनमें से एक भी बात <u>बिना पूरा</u> हुए न रहेगी; कोई बिना जोड़ा न रहेगा। क्योंकि मैंने अपने मुंह से यह आज्ञा दी है और उसी की आत्मा ने उन्हें इकट्ठा किया है।"

जी हाँ! परमेश्वर का ये **पक्का वादा** है उन सभी के लिए जो **ढूँढेंगे!** इसी प्रकार से प्रभु के वचनों में ढूंढ़कर हमने इस **<u>महत्वपूर्ण वचन</u>** को पाया है ..... जो आज के पाठ के सवाल के **उत्तर** की शुरुआत है -

सभोपदेशक (Ecclesiastes) 1:13 "मैंने अपना मन लगाया कि जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है, उसका भेद बुद्धि से सोच सोचकर मालूम करूं; यह बड़े दु:ख का काम है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उस में लगें।"

और इसी के बारे में हम दुबारा पढ़ते हैं -

सभोपदेशक (Ecclesiastes) 3:10 "मैंने उस दु:ख भरे काम को देखा है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उस में लगे रहें।"

इसका मतलब क्या है?

यह "दु:ख भरा काम" क्या है?

यह संसार की वर्तमान हालत है ............. - कष्ट की, दु:ख की, अन्याय की, धोखेबाजी की, क़त्ल की, प्राकृतिक आपदाओं की, भुखमरी की, रोगों की और मौत की।

इसी को "दु:ख भरा काम" कहा गया है!!

अब हम इस "दु:ख भरे काम" के बारे में क्या पढ़ते हैं? ..............

"दु:ख भरा काम" ये है कि परमेश्वर ने मानवजाति को इन बुराई के हालातों में "लगे रहने" की अनुमति दी है।

**इसका मतलब क्या है?**

क्या इसका मतलब यह है कि जैसे कि शरीर के लिए लगे रहना (शारीरिक व्यायाम) शरीर को लाभ पहुँचाता है, उसी तरह बुराई का यह अनुभव मनुष्य को लाभ पहुँचायेगा???

**तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है**

☞ जी हाँ! किसी भी तरह से मानव जाति को इन भयानक अनुभवों और दर्दनाक हालातों से लाभ पहुँचेगा!
इन हालातों में "लगे रहने" के द्वारा मानवजाति को महान सबक सिखने मिलेगा।

**इस प्रकार से इसका मतलब यह है कि परमेश्वर की बुराई पर अनुमति का एक योजना और उद्देश्य है!**

इसी के बारे में परमेश्वर हमें काफी स्पष्टता से यशायाह 66:1 वचन में बताते हैं -
यशायाह (Isaiah) 66:1 "यहोवा यों कहता है: आकाश मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है...?"

क्या आप समझे? नहीं।
यहां परमेश्वर एक उच्च वृतान्त दे रहे हैं!
"चरणों की चौकी" का क्या मतलब है?

यह आम तौर पर तीन या चार पैरों के एक छोटे से अलंकृत तकिये की कुर्सी को दर्शाता है जिसपर सिंहासन पर बैठे राजा अपने पैरों को आराम देते हैं।

**क्या इस वचन में परमेश्वर जो की महान राजा हैं उनके कहने का मतलब यह है?**
क्या वे स्वर्ग में बैठे हुए पृथ्वी पर अपने पैरों को विश्राम देते हैं?
नहीं! यहाँ पर विचार यह **नहीं** है...

**"चरणों की चौकी"** शब्द का एक दूसरा मतलब भी है जिसे हम प्रेरितों 22:3 वचन में पाते हैं -
प्रेरितों (Acts) 22:3 "... इस नगर में गमलीएल के पांवों के पास बैठकर पढ़ाया गया...।"

यहाँ पर प्रेरित पौलुस गमलीएल **के पाँवों के पास** बैठकर अपने सिखने की बात करते हैं–
जो की व्यवस्था के शिक्षक थे (प्रेरितों 5:34 वचन)
इस प्रकार से "पाँवों के पास बैठकर सीखना" या "चरणों की चौकी", **सिखने की अवस्था** को दर्शाता है।

☞ भारत में यह कुछ नया **नहीं** है - प्राचीन काल से विद्यार्थी अपने गुरु के चरणों में सीखते आये हैं - जिसे **"गुरु–शिष्य"** की प्रथा कहा जाता है!

**इसलिए परमेश्वर भी यही कह रहे हैं की पृथ्वी अब एक "चरणों की चौकी" है या सीखने की अवस्था में है!!**

**जी हाँ! सीखने की एक बड़ी पाठशाला!!**

इस सीखने की एक "बड़ी पाठशाला" में आप शिशुओं, बच्चों, किशोरों, युवाओं, मध्यम आयु के वर्ग के लोग और बूढ़े लोगों - सब को विभिन्न स्तर पर पाएंगे, बिलकुल वैसे ही जैसे यदि आप किसी पाठशाला में जाएँ तो विभिन्न उम्र और कक्षाओं के विद्यार्थियों को देखेंगे!

**कोई पूछ सकता है कि इतनी दर्दनाक सीखने की प्रक्रिया क्यों होनी चाहिए?**

**क्या परमेश्वर मनुष्य को इस तरह से नहीं बना सकते थे कि वे कोई भी बुराई न करें या बुराई पूरी तरह से टल जाये?**

परमेश्वर यह बहुत आसानी से कर सकते थे लेकिन मनुष्य के लिए उनका उद्देश्य ये नहीं था!

☞ तब तो मनुष्य एक **मशीन** हो जाता!

क्या परमेश्वर के लिए एक मशीन को बनाना मुश्किल है? नहीं!

आज मनुष्य खुद बोलने और चलने वाली **"रोबोट"** नाम की मशीन बना रहा है जो बिलकुल वैसा ही करती है जैसा उसको कहा गया हो या जैसी प्रोग्रामिंग की गयी हो! जरा कल्पना करें! क्या परमेश्वर के लिए मानवजाति को एक रोबोट की पीढ़ी बनाना अच्छा होता?



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

मनुष्य तब एक **गुलाम** होता जो बिना **सोचे समझे** और **वजह जाने बिना** आज्ञापालन करता - एक **जीवित** मशीन!

मनुष्य के लिए परमेश्वर की योजना यह नहीं थी!

याद है, परमेश्वर ने मनुष्य को पृथ्वी का राजा बनाया था जिसके बारे में हम स्पष्टता से इन वचनों में पढ़ते हैं -

उत्पत्ति (Genesis) 1:28 "...सब जन्तुओ पर अधिकार रखो।"

भजन संहिता (Pslams) 8:5 "...और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है।"

जरा कल्पना करें एक "मशीन" राजा! नहीं! ऐसा नहीं हो सकता!

इसलिए हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य को "अपने स्वरुप और समानता" में बनाया जिसका मतलब यह हुआ कि -

➡ मनुष्य **परिपूर्ण** और बिना पाप के था बिलकुल वैसे ही जैसे परमेश्वर **परिपूर्ण** हैं

➡ मनुष्य के पास **जीवन** और **जीने** का हक़ था और उसे मरने के लिए नहीं बनाया (या सृजा) गया

➡ मनुष्य को परमेश्वर की एक और प्रवृत्ति दी गयी थी और वो थी -

**इच्छा की स्वतंत्रता** या दूसरे शब्दों में **<u>क्या बोलना है, क्या करना है या क्या सोचना है,</u>** को चुनने की स्वतंत्रता!

| |
|---|
| **मनुष्य को वह दिया गया जिसे <u>स्वतंत्र नैतिक संस्था</u> कहते हैं!** |

मनुष्य अपनी क्रियाओं को चुनने के लिए **<u>स्वतंत्र</u>** था!

इसी रीति से परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया!

पर इस **स्वतंत्रता** के साथ एक **खतरा** आता है! **एक भारी खतरा!**

बृहमाण्ड में **दो** शक्तियाँ या **दो मार्ग** हैं -- **अच्छाई** और **बुराई**

और प्रत्येक के पास उसका अपना परिणाम या फल है -

☞ **अच्छाई** खुशी, शांति, आनंद और अनन्त जीवन की ओर ले जाती है।

**तेरा वचन सत्य है** 📖 **तेरा वचन सत्य है** 📖 **तेरा वचन सत्य है**

**बुराई** दर्द, दु:ख, कष्ट और मृत्यु की ओर ले जाती है।
और मनुष्य को अपनी ही बुद्धि से सही चुनाव करना जरुरी है, जैसा की अय्यूब 34:4 वचन में वर्णन किया गया है -

अय्यूब (Job) 34:4 “जो कुछ ठीक है, हम अपने लिये चुन लें; जो भला है, हम आपस में समझ बूझ लें।”

अब मनुष्य को एक **स्पष्ट** और **सही** चुनाव करने के लिए इन **दो** सिद्धांतों और उनके फल या परिणामों की स्पष्ट समझ होनी जरुरी है।

**उसे समय भी चाहिए!**

और....परमेश्वर ने वही किया है! उन्होंने मनुष्य के लिए बनाई गयी एक **दिव्य योजना** के द्वारा मनुष्य को **अच्छाई** और **बुराई** की समझ प्राप्त करने का एक **अवसर** प्रदान किया है!

इसी कारण से अदन की वाटिका में वृक्ष का नाम
"भले या बुरे के ज्ञान का वृक्ष" **(उत्पत्ति 2:17)** रखा गया था।
- मतलब की, उस फल को खाने और आज्ञा नहीं मानने के कार्य ने "भलाई और बुराई" की समझ को प्राप्त करने की **प्रक्रिया में .... गति** ला दी।

[ **पर कोई कह सकता है - इन सारे अनुभवों का क्या लाभ या उद्देश्य जब मनुष्य का जीवन इतना छोटा है और मृत्यु पर इसका अंत हो जाता है?]**
यही वह जगह है जहाँ पर हम परमेश्वर की दिव्य योजना की **महान बाइबल की सच्चाई** पर आते हैं, जो अपेक्षाकृत मानव जाति के अधिकांश लोगों के लिए अज्ञात है-

**सारी मानवजाति जो मर चुकी है और जो मरने वाली है .... फिर से जीवित की जाएगी!**

जी हाँ! आप यकीन करें या न करें!


**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

यह कुछ ऐसा है जो बिलकुल **अविश्वसनीय** है!

यदि इसके बारे में परमेश्वर के वचनों में **न लिखा** होता तो इसपर **यकीन करना मुश्किल होता!**

पुनरुत्थान में सारे मनुष्यों को फिर से जीने का यह अवसर यीशु की **छुड़ौती** के बलिदान और कलवरी के क्रूस पर उनकी मृत्यु के द्वारा प्राप्त हुआ है, जैसा की हम 1 कुरिन्थियों 15:22 वचन में पढ़ते हैं -

1 कुरिन्थियों (Corinthians) 15:22 "और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे।"

अब आमतौर पर पूछा गया सवाल यह है कि -

क्या सबको जीवित किया जायेगा - मानवजाति में से बुरे और भले दोनों को?

अहा! प्रेरित पौलुस बहुत स्पष्टता से इसके उत्तर की पुष्टि करते हैं -

प्रेरितों (Acts) 24:15 "और परमेश्वर से आशा रखता हूं जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा।"

जी हाँ! बिलकुल स्पष्ट लगता है!

यीशु ने भी स्पष्टतया से ऐसा ही कहा है, जैसा कि हम उनके वचनों में पढ़ते हैं -

यूहन्ना (John) 5:28 "इससे अचम्भा मत करो; क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकल आएंगे।"

जी हाँ! यीशु के दूसरे आगमन, यानि परमेश्वर के राज्य में **सभी मनुष्यों** को जिलाया जायेगा, जब वर्तमान **बुराई** के शासन का अंत हो जायेगा और **धार्मिकता** का राज शुरू होगा।

**जरा कल्पना कीजिए - पूरी दुनिया को एक दूसरा मौका मिल रहा है!**

- **पछताने** और **सुधरने** का एक अवसर

- **माफी माँगने** और बड़ी गलतियों और गलत कार्यों के लिए ईमानदारी से खेद व्यक्त करने का एक अवसर।

**उदाहरण:** हत्यारे और जिनकी हत्या हुईदोनों फिर से आमने सामने जीवित खड़े हों!!
जी हाँ! कितने सारे लोगों और यहाँ तक की बड़े अपराधियों ने जेल की सलाखों के पीछे पड़े-पड़े ये **सोचा** होगा और उम्मीद की होगी और सपना देखा होगा -

"**काश मैं अपनी जिंदगी को फिर से जी पाता ...**"

"**काश जो मैं अब जानता हूँ उस समय जानता होता ...**"

"**काश मेरे पास फिर से जीने का एक मौका होता तो मैं वो बहुतसे कार्य नहीं करता जो मैंने किये हैं**"।

जी हाँ! यह बहुतसारे लोगों की चाहत है! परमेश्वर **सबको यह** अवसर देने वाले हैं!
यही कारण है कि परमेश्वर की योजना में **दो** महान काल हैं –

| |
|---|
| 1.**पहले और दूसरे संसार**<br>बुराई की अनुमति के लिए<br>**(बुराई की अवधि)**<br>इस समय में हम "आदम में सब मरते हैं" को देखते हैं |

और फिर...

| |
|---|
| 2.**तीसरा संसार**<br>धार्मिकता की समझ के लिए (2 पतरस 3:13)<br>**(भलाई का समय)**<br>इस समय में "मसीह में सब जिलाए जायेंगे" |

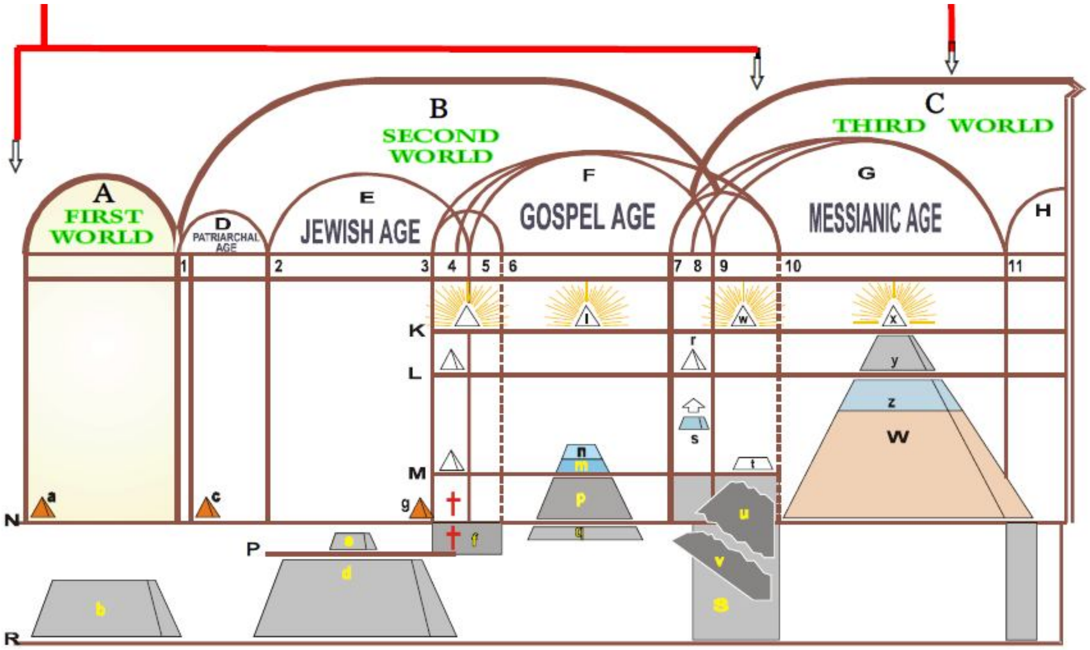


इस प्रकार **सब** के लिए **दो** अनुभव और जीने की दो अवधियां होंगी!

**वास्तव में हर कोई दो बार जियेगा!!**

**<u>कितने कम</u> लोगों को बाइबल की <u>इस महान सच्चाई</u> की झलक मिली है!**

यही परमेश्वर की योजना है जो उन्होंने मनुष्य के लिए बनाई, जिसे हम रोमियों 8:20, 21 वचन में पढ़ते हैं -

रोमियों (Romans) 8:20, 21 “क्योंकि <u>सृष्टि</u> अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करने वाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस <u>आशा</u> से की गई। कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी।”

**अति संक्षेप में यही परमेश्वर की योजना है!**

यह वचन **दो** तरह की अवस्थाओं या जीवन के बारे में बताता है-

"विनाश के दासत्व" की एक अवस्था

**तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है**

.... और "परमेश्वर की संतानों की महिमा की स्वतंत्रता" की एक अवस्था।
जी हाँ! आइये हम इन वचनों का मतलब नीचे देखें –

"सृष्टि"- यह मानवजाति की दुनिया का चिन्ह है।

"व्यर्थता के अधीन......अपनी इच्छा से नहीं"- यह **सब** के ऊपर आम तोर पर आए पाप और मृत्य दंड की **अवस्था** को दर्शाता है, जैसा की हम इन वचनों में पढ़ते हैं-

भजन संहिता (Psalms) 51:5 "देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा॥"

रोमियों (Romans) 5:12 "इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया।"

"अपनी इच्छा से नहीं"- यह इस मामले में **व्यक्तिगत पसंद का नहीं** होने को दर्शाता है!

यह कुछ ऐसा है जैसे कि **माता पिता** अपने बच्चों की भलाई के लिए उनके बदले में फैसला लेते हैं, कभी कभी उनके जन्म लेने से पहले ही या जब वे छोटे बच्चें होते हैं तब ही!!

इसी प्रकार से परमेश्वर, जो **सारी सृष्टि** के पिता हैं **(इफिसियों 3:14, 15)**, उन्होंने पूरी मानवजाति के **बदले** में फैसला लिया।

"इस आशा से अधीन की गयी" -**परमेश्वर** का **बुराई** की **अनुमति** देने के पीछे का उद्देश्य "इस आशा" में है।

**यह "आशा" क्या है?**

आशा यह है कि, "बुराई की अनुमति" **और बुराई की समझ और उसके कड़वे "स्वाद"** से सबक और फ़ायदा प्राप्त किया जायें,जो कि बुराई के लिए घृणा और धार्मिकता के लिए प्रेम की ओर ले जायें।

[ **अब कोई कह सकता है - क्या बुराई के इस ज्ञान को पाने का कोई बहतर और आसान और कम दर्द भरा तरीका नहीं हो सकता?**]

**तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है**

**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

इस सवाल का उत्तर देने के लिए हमे ज्ञान प्राप्त करने के विभिन्न तरीकों पर ध्यान करना चाहिए।

वास्तव में ज्ञान हासिल करने के लिए **चार तरीके** हैं जैसा की नीचे दर्ज किया गया है -

1. अन्तर्ज्ञान (INTUITION)
2. पर्यवेक्षकण (अवलोकन) (OBSERVATION)
3. जानकारी (INFORMATION)
4. अनुभव (EXPERIENCE)

आइये अब हम एक एक करके अध्ययन करके इन तरीकों को समझें –

## 1. अन्तर्ज्ञान (INTUITION)

यह सारे ज्ञान की सीधी समझ है जिसे करने या "चखने की" प्रक्रिया के बग़ैर प्राप्त किया जाता है । यह सब चीजों के प्रति एक **स्वत: पूर्ण** और स्पष्ट ज्ञान का संकेत करता है।

यही वो तरीका है जिससे परमेश्वर ने ज्ञान को प्राप्त किया है - क्योंकि परमेश्वर को **बुराई** और इसके परिणामों के बारे में जानने और समझने के लिए इसका अनुभव करने की आवश्यकता **नहीं** है।

आइये हम परमेश्वर के अन्तर्ज्ञान की शक्ति के बारे में यशायाह 40:14 वचन में पढ़ें –

यशायाह (Isaiah) 40:14 "उसने किससे सम्मति ली और किसने उसे समझाकर न्याय का पथ बता दिया और ज्ञान सिखाकर बुद्धि का मार्ग जता दिया है?"

जी हाँ! परमेश्वर के शिक्षक वे खुद हैं! **यही अन्तर्ज्ञान है।**

मानवजाति अन्तर्ज्ञान की **<u>शक्ति के होने का दावा नहीं कर सकती</u>**!

अब हम दूसरे तरीके पर आते हैं ....

## 2. पर्यवेक्षकण (अवलोकन) (OBSERVATION)



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

यह ज्ञान प्राप्त करने का वह तरीका और पद्धति है जिसे दूसरों के जीवन और कार्यों से सम्बंधित मामलों के परिणामों और फलागम का **ध्यान** से **अवलोकन** करके प्राप्त किया जाता है।

इसी प्रकार पारिवारिक जीवन में, मित्रों के बीच में, रिश्तेदारों के बीच में, पाठशाला या काम करने की जगह या बस या रेल में यात्रा करते समय अधिक ज्ञान **"अवलोकन"** के द्वारा प्राप्त किया जाता है।

उदाहरण: हानिकारक और पापी प्रथाएं जैसे धूम्रपान / पीना / जुआ / बुरी भाषा / स्वार्थीपन आदि आदतें।

हालाँकि यह तरीका बहुत से पाठों को सिखने में **काम** करता है और **मदद** करता है पर यह **<u>सारे</u>** <u>मामलों</u> का **गहरा** और चिरस्थायी ज्ञान प्रदान **नहीं** करता!!

यह बहुत से पाठों को सिखने में उपयोगी है पर **<u>सब तरह</u>** के पाठों को सिखने में नहीं!

लेकिन, **क्या आप जानते हैं?**

- की इसी तरीके से **स्वर्गदूत बुराई** और **पाप** के अपने ज्ञान को प्राप्त कर रहे हैं,

जैसा की हम 1 कुरिन्थियों 4:9 वचन में पढ़ते हैं -

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 4:9 "...क्योंकि हम जगत और <u>स्वर्गदूतों</u> और मनुष्यों के लिये एक तमाशा ठहरे हैं।"

जी हाँ! "तमाशा "शब्द का मतलब **प्रदर्शन** है!

किसी कवि ने अच्छी तरह से कहा है - **"सारी दुनिया एक मंच है और लोग इसके अभिनेता हैं!"**

**- यह सच है!**

सचमुच में दुनिया मनुष्यों और स्वर्गदूतों दोनों के लिए एक मंच है!

यहाँ तक की, **बाढ़** आने से पहले के समय में (पहला संसार) अवलोकन कर रहे इन स्वर्गदूतों में से कुछ ने गिरी हुई मानवजाति की **मदद** के लिए आना भी चाहा **(इब्रानियों 2:5)** ।

वे मानव जाति के पाप और मृत्यु की इतनी भयानक परिस्थितियों में गिरने पर हैरान थे!

जी हाँ! भले ही स्वर्गदूतों को इस तरह से बुराई और पाप का ज्ञान प्राप्त होता है, पर हम देखते हैं कि मानवजाति को **पूरा** ज्ञान प्राप्त करने के लिए **केवल** अवलोकन ही काफी **नहीं** है।

अब हम ज्ञान प्राप्त करने के तीसरे तरीके पर आते हैं।

## 3. जानकारी (INFORMATION)

यह ज्ञान प्राप्त करने की एक विधि है जिसमें **लिखित** या **बोले** गए **रेकार्ड** के आधार पर उन मामलों का विवरण और उनसे जुड़े संभावित खतरों की जानकारी को प्राप्त किया जाता है।

यही वो विधि है जिसका उपयोग परमेश्वर ने अदन की वाटिका में किया था!

इसके बारे में हम उत्पत्ति 2:16, 17 वचनों में पढ़ते हैं -

उत्पत्ति (Genesis) 2:16, 17 "... पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना...॥"

लेकिन क्या इसने काम किया? क्या यह जानकारी पर्याप्त थी?

नहीं! यह **जानकारी पाप** को **रोक** न सकी!

ज्ञान के **प्रसारण** की इस पद्धति को आज **माता-पिता और बच्चों** के रिश्ते में देखा जाता है।

माता-पिता अपने बच्चों को अपने जीवन में घटित निजी अनुभवों और मुश्किलों और परेशानियों की **जानकारी** देकर **बुराई** से बचाने की कोशिश करते हैं।

**--लेकिन क्या बच्चे सुनते हैं?**

कुछ मामलों में - हो सकता है, लेकिन सामान्य जवाब है - **नहीं!**

तो अब हम **चौथे** तरीके पर आते हैं और हम यह देखेंगे की यह **सबसे प्रभावशाली** तरीका है -

## 4. अनुभव (EXPERIENCE)

**तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है**

**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

यह अनुभवों के द्वारा यानि व्यावहारिक रूप से **कार्यों को करके** किसी मामले को जानने की विधि है जिसमें निजी तौर पर "अपने हाथों से महसूस करके" ज्ञान को प्राप्त किया जाता है!

इस तरीके से **बुराई** का ज्ञान प्राप्त करना **कड़वा** और **दर्दनाक** है पर यह मन और स्मृति पर **एक ज्यादा मजबूत प्रभाव छोड़ता है।**

यह तरीका **बाद** में पूरी मानवजाति के लिए एक **आशीष** साबित होगा, जिसके बारे में हम इब्रानियों 12:11 वचन में पढ़ते हैं -

इब्रानियों (Hebrews) 12:11 “वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है; तौभी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।”

जी हाँ! अनुभव **सबसे प्रभावशाली तरीका** होगा!

यही वजह है कि हम लोकप्रिय कहावतें सुनते हैं -

**1. अनुभव सर्वोत्तम शिक्षक है!**

**2. चखकर देखो तो जानो!**

इसीलिए परमेश्वर ने बुराई की अनुमति दी, ताकि मानवजाति **भयानक परिणामों** को, जो उनपर आते हैं अनुभव करे और इसका शरीर, मन आदि पर प्रभाव को सीखे -

- **शरीर पर** बीमारियां, कुरूपता, विकलांगता, आदि का प्रभाव।
- **मन पर** - तनाव, मनोविकृति, पागलपन आदि का प्रभाव।
- **व्यक्तियों में** भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक विकारों का प्रभाव।
- **परिवारों में** स्वार्थीपन के द्वारा पारिवारिक बंधनों के टूटने का प्रभाव।


**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

☞ **समाज में** माता-पिता के अपनी बुराई के जीवन की अपराध-बोध भावना के कारण, अपने बच्चों को अनुशासन में न रखने के परिणाम स्वरूप, अन्याय और अनैतिकता का नियंत्रण लेना।

☞ और फिर **देशों और पूरी दुनिया** के बीच - अशांति, नस्लीय भेदभाव, सीमा पार आतंकवाद और युद्ध आदि।

जी हाँ! **बुराई** की वजह से कितनी अधिक **तबाही** हुई है!

**ये सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बुराई की अनुमति के परिणाम हैं।**

आइये हम उदाहरण देकर समझाने की कोशिश करते हैं कि परमेश्वर इस बुराई के अवधि की अनुमति देकर वास्तव में क्या **कर रहे हैं** –

**आग**

जी हाँ! आइये हम आग का ….. उदाहरण लेते हैं!

यह उज्ज्वल, रंगीन और देखने में आकर्षक है! एक छोटा बच्चा इससे जुड़े बड़े खतरों को जाने बिना इसकी ओर बहुत आकर्षित होता है!

☞ अब एक **प्यारा** और **बुद्धिमान** पिता बच्चे को आग की ओर आकर्षित और सम्मोहित देखकर क्या करेगा?

वह बच्चे को आग का **अनुभव** इस प्रकार कराएगा -
- की वह बच्चे के हाथ को गर्मी **महसूस** करने जितना **नजदीक** लाएगा…
…. लेकिन **इतनी दूर** रखेगा की उसका हाथ **जल** न जाये!
इस प्रकार बच्चा **आग** से जुड़े खतरों का **मजबूत सबक** सीखेगा जिसे भूलने की सम्भावना कम है!

**पाप के साथ भी ऐसा ही है!**

यह बिलकुल आग के जैसा है!
बाहर से यह आकर्षक और आनन्ददायक लगता है।
**पाप के सारे मार्ग** गिरे हुए मनुष्य को आकर्षित करते हैं, जैसा की हम नीतिवचन 14:12 में पढ़ते हैं –

नीतिवचन (Proverbs) 14:12 “ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।”

जी हाँ! **आज** पाप के सारे मार्ग **गिरे हुए मनुष्य को बहुत आनंदायक** लगते हैं - झूठ, व्यभिचार, पीना, अनैतिकता आदि।
लेकिन इसको **“चखना”** पीड़ा, दुःख और मृत्यु के **“कड़वे स्वाद”** की ओर ले जाता है।
इसीलिए यह देखा जाता है कि **रोमियो 8:20, 21** वचन में परमेश्वर की "**आशा**" यह है कि, मानव जाति पाप की "**गर्मी**" के साथ के इस अनुभव में **बहु मूल्य** सबक सीखेगी जो कि पाप की मजदूरी **मृत्यु** है, जैसा की हम **रोमियो 7:13** वचन में पढ़ते हैं –

रोमियो (Romans) 7:13 “…कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे।”

लेकिन परमेश्वर सुनिश्चित करते हैं कि यह अनुभव मानव जाति को **स्थायी** रूप से नष्ट करने वाला एक **“जला”** देने जैसा **नहीं** होगा!!
क्योंकि हम **उनकी करुणा और अनुग्रह** को **होशे 13:14** वचन में दर्ज देखते हैं –

होशे (Hosea) 13:14 “मैं उसको अधोलोक के वश से छुड़ा लूंगा और मृत्यु से उसको छुटकारा दूंगा…॥”

**तेरा वचन सत्य है   तेरा वचन सत्य है   तेरा वचन सत्य है**

**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

जी हाँ! परमेश्वर ने **मानवजाति को मृत्यु से उद्धार देने** की योजना बनाई और वह उद्धार कलवरी के क्रूस के द्वारा था!

**और सचमुच में मानवजाति सीखेगी!**

भविष्यद्वाणी के अनुसार मानवजाति का भविष्य उस समय क्या होगा, आइये इसे हम यशायाह 13:12 वचन में पढ़ें –

यशायाह (Isaiah) 13:12 "मैं मनुष्य को कुन्दन से, और आदमी को ओपीर के सोने से भी अधिक महंगा करूंगा।"

जी हाँ! "**कुन्दन**" महान **चरित्र** के संदर्भ में एक प्रतीक या चिन्ह है!
और फिर से हम एक और भविष्यद्वाणी पढ़ते हैं –

यशायाह (Isaiah) 66:24 "तब वे निकलकर उन लोगों की शवों पर जिन्होंने मुझ से बलवा किया दृष्टि डालेंगे; क्योंकि उनमें पड़े हुए कीड़े कभी न मरेंगे, उनकी आग कभी न बुझेगी, और सारे मनुष्यों को उन से अत्यन्त घृणा होगी॥"

जी हाँ! पूरी मानवजाति पाप से **घृणा** और धार्मिकता से **प्रेम** करना सीखेगी और **सुनहरे** चरित्र में बढ़ेगी!!

और परमेश्वर के चरणों की चौकी यानि पृथ्वी जो की **"पाठशाला"** है, उसका क्या होगा?
पृथ्वी के भविष्य के हालात के बारे में यशायाह 60:13 वचन में पढ़ते हैं –

यशायाह (Isaiah) 60:13 "...और मैं अपने चरणों के स्थान को महिमा दूंगा।"

जी हाँ! यह "महिमा" शब्द पृथ्वी की **भविष्य** में **परिपूर्ण** और **खुशहाल** हालात को दर्शाता है, जिसके बारे में हम बहुतस्पष्टता से फिर से यशायाह 14:7 वचन में पढ़ते हैं –

यशायाह (Isaiah) 14:7 "अब सारी पृथ्वी को विश्राम मिला है, वह चैन से है; लोग ऊंचे स्वर से गा उठे हैं।"

यहाँ "गा उठना" **ख़ुशी** और **शांति** के हालात का एक चिन्ह है!
आजकल क्या हम लोगों को अक्सर गाते देखते हैं? नहीं, बहुतकम!


**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

यह आजकल **खुशियाँ और शांति के कम हो जाने** का संकेत है!

और फिर से, यशायाह 35:10 वचन में उस समय के बारे में लिखा हुआ है –

यशायाह (Isaiah) 35:10 "यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे, और उनके सिर पर सदा का आनन्द होगा; वे हर्ष और आनन्द पाएंगे और शोक और लम्बी सांस का लेना जाता रहेगा॥"

जी हाँ! क्या आपने देखा? वे **सदा** का हर्ष और आनंद पाएंगे! क्या इसपर यकीन करना मुश्किल है? आइये हम इसी विषय की पुष्टि करने के लिए एक दूसरे वचन को पढ़ें –

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 21:4 "और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।"

ये **पहली बातें** क्या हैं?

जी हाँ! ये हैं - **बुराई - बीमारी - दर्द - आंसू - मृत्यु - बुराई की अनुमति! यह समाप्त हो गया होगा!**

जी हाँ! मृत्यु और दुख और रोना सब गायब हो जाएगा!

और फिर, कुछ समय की अवधि के लिए बुराई की अनुमति देने के पीछे परमेश्वर की महानता और ज्ञान और प्रेम और शक्ति तब प्रगट हो जाएगी, जैसा की हम अय्यूब 14:4 वचन में पढ़ते हैं –

अय्यूब (Job) 14:4 "अशुद्ध वस्तु से शुद्ध वस्तु को कौन निकाल सकता है? कोई नहीं।"

जी हाँ! **सिर्फ परमेश्वर** ही इस वर्तमान **बुरे** संसार से **परिपूर्ण लोगों** से बसा हुआ **एक परिपूर्ण संसार** बना सकते हैं!!

जब मानवजाति बुराई और पाप को **घृणा** करना सीखेगी उसके बाद ही यह संभव होगा!

**परमेश्वर का बुराई की अनुमति देने का यही कारण है!**

**तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है**

**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

और भविष्य में उनकी **सारी** सृष्टि, **परमेश्वर की दिव्य योजना** और बुराई की अनुमति में **उनके प्रेम और न्याय और ज्ञान और शक्ति** का प्रदर्शन देखने के कारण स्वर्ग और पृथ्वी पर स्तुति और आराधना करनेवाली है -

महान **सर्वशक्तिमान परमेश्वर** की - "जो सिंहासन पर बैठा है"

...और उनके **महिमामय पुत्र यीशु** यानि "मेमने" की।

सचमुच में! आइए हम एक और भविष्यद्वाणी के वचन में सुनें की तब पूरा संसार क्या कहेगा -

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 5:13 "फिर मैं ने स्वर्ग में **(स्वर्गदूतों)** और पृथ्वी पर **(मानवजाति)** और पृथ्वी के नीचे **(मरे हुए लोग जिनका तब फिर से जीवन में पुनरुत्थान हो चूका होगा)**... यह कहते सुना, "जो सिंहासन पर बैठा है उसका और मेमने का धन्यवाद और आदर और महिमा और राज्य युगानुयुग रहे"

जी हाँ! इस ज्वलंत सवाल का जवाब और **सच्चाई** पाने के लिए **<u>अब</u> आइये आज <u>हम</u> हमारी स्तुति और आराधना परमेश्वर को भेंट करें।**

--आमीन--



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**